## अभंग ७५

(राग: झिंजोटी - ताल: आदिताल)

खंडेराय प्रेमपुरीं आज देखिला रे ।।ध्रु.।। नंदीगमन उत्तरेस मुख असे पूर्वदिशीं। जटा गंग भंडार भाळीं रेखिला रे।।१।। पात्र त्रिशुळ वाम करी डमरु खड्ग सव्य धरी। म्हाळसासहित तेज फार फाकला रे।।२।। जरीदार पितांबर रत्नखचित अलंकार। चंपकादि पुष्पहार अंग झाकिला रे।।३।। माणिकदास पाहनि मूर्ति वर्णितसे गुणकीर्ति। जोडुनि कर सन्मुखासि उभा ठाकला रे।।४।।